प्रकृति है सबसे बड़ा शिक्षक

क्यों चलती है पवन, क्यों घूमें है गगन, क्यों होती है सहर (सुबह)

न तो ये केवल कवि की कल्पना है न ही केवल मनोभाव को प्रदर्शित करते शब्द वरन केवल विज्ञान है। प्रकृति को विज्ञान से जोड़ना नहीं है प्रकृति तो स्वयं विज्ञान है।

कभी बचपन में पढ़ा था कि कोई भी क्रमबद्ध प्रक्रिया विज्ञान होती है। प्रकृति से ज्यादा क्रमबद्ध और क्या है तो प्रकृति ही है सबसे बड़ी विज्ञान शिक्षक।

क्यों हम बच्चों को रटने के लिए कहते हैं हमें केवल बालकों की निरीक्षण के लिए प्रेरित करना है देखो, सुनों और ग्रहण करों। इसके बाद उससे जूझों और प्रश्न करो स्वयं से, साथियों से, पालकों से तथा शिक्षकों से जितना बारीकी से निरीक्षण होगा बालक उतना ही संवेदनशील होकर सीखने की ओर झुकेगा।

धुआँ ऊपर क्यों उठता है, बारिश की बूंदे नीचे क्यों आती है, रंग कैसे, क्यों दिखते है, पत्ते हरे क्यों होते है, फूलों के रंगों का क्या महत्व है, तारे टिमटिमाते है, चंद्रमा हमेशा एक जैसा क्यों नहीं होता और हर दिन सूरज उगता है कभी छुट्टी नहीं लेता।

प्रत्येक 2 माह बाद मौसम बदलता है कितना कुछ कहती है प्रकृति हमसे बिना कुछ कहे, आइये उन शब्दों को समझने की कोशिश करें।

यही तो है समझने की क्रिया विज्ञान।